वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष २५ फरवरी - २०२५ प्रकाशन - ०२

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

फरवरी २०२५

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

वेदान्त पीयूष

विषय सूचि

1,	प्रकाशक पृष्ठ	02
2.	श्लोक	05
3.	पू. गुरुजी का संदेश	06
4.	वाक्यवृत्ति	11
5.	गीता और मानवजीवन	17
6.	जीवन्मुक्त	21
7.	श्री कौशल्या चरित्र	25
8.	कथा	29
9.	आश्रम-मिशन समाचार	32
10.	आगामी कार्यक्रम	54
11.	इण्टरनेट समाचार	57
12.	लिन्क	58

फरवरी 2025

अरुणेनेव बोधेन पूर्व सन्तमसे हृते।
तत आविर्भविदात्मा स्वयमेवांशुमानिव॥

(श्लोक - ४३)

जैसे अरुणोदय से सूर्योदय से पूर्व ही अन्धकार दूर हो जाता है, वैसे ही आत्मसाक्षात्कार से पूर्व ज्ञान से अज्ञान की निवृत्ति हो जाती है।

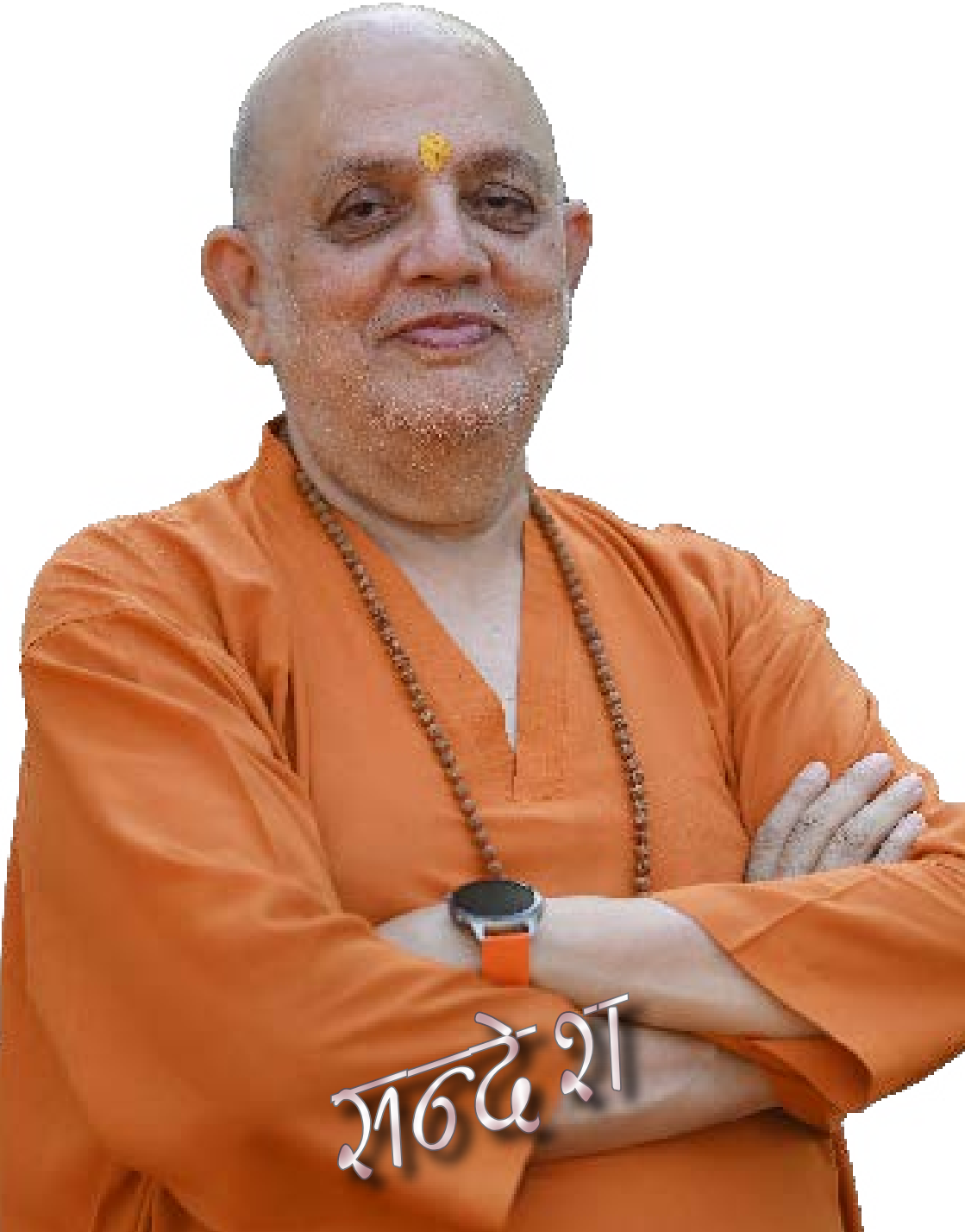
सदेश

पंचक्लेश – 3

पांच क्लेश वे हैं, जो हमें सतत संतप्त करते हैं। जिनका मूल कारण अविद्या है। अपने स्वरूप के अज्ञान के उपरान्त हमारी भ्रामक अस्मिता बनती है। यह अस्मिता दूसरा क्लेश होती है। प्रामाणिक ज्ञान के अभाव में हम पूर्णस्वरूप ब्रह्म होते हुए भी अपनी संकुचित जीवरूप अस्मिता को धारण किए हुए है। यदि अस्मिता संकुचित हुई तो इसका पर्यवसान राग-द्वेष रूप तीसरे और चौथे क्लेश में होता है।

राग व द्वेष जगत के साथ के मोहात्मक सम्बन्ध है। जब भी किसी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति के प्रति महत्वबुद्धि होती है, उसके उपरान्त अनुकूल को सुख का हेतु तथा प्रतिकूल को दुःख का हेतु मान लिया जाता है। इस प्रकार की अवधारणा ही राग-द्वेष को जन्म देती है। जो कि मन में ऐसी बेबसी उत्पन्न करते है, जिसके फलस्वरूप जगत के साथ व्यवहार में स्वतंत्रता

हम खो बैठ़ते हैं। ऐसे समय उचित–अनुचित के विवेक से युक्त होने पर भी उचित को जी नहीं पाते और अनुचित व अधर्म का आश्रय संस्कारवशात व बेबस होकर लिया जाता है। अनुकूल की प्राप्ति हेतु प्रवृत्ति तथा प्रतिकूलता से मुक्ति हेतु निवृत्ति वा पलायन का आश्रय लेना स्वतंत्रता नहीं किन्तु भय व मजबुरी से ही प्रेरित होता है। जहां कर्म सजगतापूर्ण व संकल्पपूर्वक चेष्टा का नाम है, वहीं संकल्पपूर्वक चेष्टा नहीं होते हुए प्रतिक्रियात्मक चेष्टा होती है, अर्थात् हमारी कर्म की स्वतंत्रता का अन्त होता है। यह एक ऐसी बन्धनात्मक स्थिति है कि उचित–अनुचित का ज्ञान होते हुए भी उचित का आश्रय नहीं ले पाते हैं। यह अत्यन्त घुटन व मन को अशान्त करने वाली परिस्थिति होती है। इतना ही नहीं किन्तु राग–द्वेष ही मन की मलिनता है। जहां रागादि होते हैं, वहां दृष्टि वैसी ही धुंधली हो जाती है जैसे शीशे के उपर रज होने पर प्रतिबिम्ब की अस्पष्टता होती है, अर्थात् जगत को यथावत् देख नहीं पाते हैं किन्तु अच्छा वा बुरा देखते हैं। यह सुन्दर जगत ईश्वर के द्वारा निर्मित है, तथा स्वयं आनन्दस्वरूप परमात्मा की ही अभिव्यक्ति है, अतः अपने आप में सम्पूर्ण है, तथापि हमारी रागादि युक्त मलिन दृष्टि उसे देख नहीं पाती है। अनुकूलता की प्राप्ति हेतु प्रवृत्ति तथा प्रतिकूलता

से पलायन करना यह रागादि के बन्धन से छूटने के असफल प्रयास होते हैं।

यद्यपि रागादि की वजह से समस्या होती है, तथापि हर व्यक्ति में पसंद-नापसंद स्वाभाविक रूप से ही होते है। जब तक जीवत्व के धरातल पर है, तब तक पसंद-नापसंद होना न केवल स्वभाविक है, किन्तु आवश्यक भी है। हमें यह विचार और विवेकपूर्वक देखना चाहिए कि कौनसी पसंद-नापसंद क्लेशरूप होती है और कौनसे पसंदादि से युक्त होने पर हमारे आध्यात्मिक उत्थान का हेतु बनते है।

जो पसंद-नापसंद अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं पर आधारित न होकर शास्त्र और गुरु सम्मत होती है, वह कल्याण और मुक्ति का कारण होते हैं। शास्त्र हमारे जीवन की वास्तविकता को ध्यान में रखकर कार्य-अकार्य का प्रतिपादन करते हैं। वे जीवन के मूल्य और सत्य के बारे में बताते है। प्रत्येक मूल्य हमें छोटेपन से मुक्त करके उदारता व बडप्पन से युक्त करते जाते है। धर्म पालन से हम संकुचित, अलग-थलग जीव नहीं रहते हुए, व्यष्टित्व से मुक्त होकर उदारता से युक्त समष्टि से जुड़ने लगते है। अतः यही पसंद-नापसंद ही स्वीकारने योग्य और

कल्याणकारी है। धर्मनिष्ठ व्यक्ति भी अधर्म को नापसन्द करता है, तथा धर्म के प्रति पसंदगी रखता है। वह मन को सात्विक बनाता है, एवं शास्त्र के हिसाब से पसंद-नापसंद रख अपनी पूर्णता से प्रेरित होता है। हमारे मानने से ही जानने का मार्ग प्रशस्त होता है। शास्त्र की बातों को मानना, 'जानने' की शुरुआत है। हम ईश्वर के साम्राज्य को, उनके बनाए नियम को तथा ऐसे कर्म के सिद्धान्त को, तथा अपनी परिपूर्णता को मान रहे हैं, अतः यद्यपि कभी-कभी शास्त्र द्वारा दिये गए इष्टानिष्ट, संकुचित जीव को पीड़ा दे सकते हैं, तथापि उन्हें ही स्वीकार करना चाहिए।

जिन पसंदगी-नापसंदगी का आधार हमारा क्षुद्र अस्मिता है, तथा जो हमारी कल्पना से ही निर्मित है, उसका अनुसरण करना प्रेयपथ है। इनसे जनित क्लेश नारकीय, तीव्र और अकल्पनीय होता है। वह ज्ञान-विज्ञान नाशन है। ज्ञानवान के लिए शत्रु है। वह ही क्लेशरूपा है, और ज्ञानरूपी खडग से छेदन करने योग्य है। शास्त्रोक्त पसंद-नापसंद के अनुरूप चलना श्रेयपथगामी होना है। वह शास्त्र के सिद्धान्त को जीने के लिये प्रेरित कर ज्ञान का पात्र बनाते हैं। इस प्रकार वे क्लेश का नहीं, बल्कि क्लेश की निवृत्ति का हेतु होते हैं।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्वं परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

श्लोक – १९

अनापन्न विकारः सन्
अयस्कान्त वदेव हि।
बुद्ध्यादिंश्चालयेत् प्रत्यक्
सोऽमित्यवधारय ॥

जैसे चुम्बक अविकारी रहते हुए भी लोहे को चलायमान करता है, वैसे ही जो प्रत्यगात्मा अविकारी रहकर बुद्धि आदि को चलाता है, वह मैं हूं, ऐसा तुम निश्चय करों। जिसमें कोई विकार नहीं, जो स्थिर रहता है, जैसे चुम्बक। वैसे ही आत्मा..। बुद्धयादि में वह न कुछ करती है और न करवाती है।।

वाक्यवृत्ति

पूर्व श्लोक से आचार्य ने विविध युक्ति प्रदान करते हुए बता रहे हैं कि 'सो अहं इति अवधारय'। अर्थात् वह मैं हूं यह निश्चय करो। इस ग्रंथ का विषय महावाक्य के अर्थ का बोध कराना है। अखण्डार्थबोधकानि महावाक्यानि। जो अखण्डता का बोध कराता है, वह महावाक्य है। आज जीव अर्थात् अपने बारे में अज्ञानवशात् अनेकों धारणाओं के कारण स्वयं को संकुचित जीव मान रहे है। जब हम संकुचित जीव होते है तो स्वाभाविक ही ईश्वर को अपने से पृथक् मानकर संकुचित कर देते है। अपने, ईश्वर और जगत के बारे में निराधार, गलत धारणा ही संसार की जड़ बनता है। अतः जीव, जगत और ईश्वर के यथार्थ का ज्ञान आवश्यक है। सबसे पहले हमें यह देखना होगा कि हमने अपने बारे में कौन कौनसी धारणाएं उत्पन्न करी है। उसे समझना ही त्वं पद का वाच्यार्थ समझना है। जैसे जैसे हम इस अध्यारोप को अध्यारोप की तरह जानते है, वैसे वैसे अपने पर से अध्यारोप की निवृत्ति होती जाती है।

वाक्यवृत्ति

आचार्य यहां इस मैं के अर्थात् अपने बारे में बताते हुए कहते हैं कि सो अहं इति अवधारय। आचार्य चुम्बक के दृष्टान्त से हमें अविकारी बता रहे हैं। पूर्व श्लोक में देहादि विषयक बताया कि देह आदि हमारी सन्निधि में विविध ग्रहण-त्याग आदि रूप व्यापार में सक्षम होता है। किन्तु यहां हमारा अनुभव यह बताता है कि विविध कर्म हम ही कर रहे है। हमें यह स्पष्टरूप से भान होता है कि हम कर्म करनेवाले कर्ता है तथा विविध परिस्थितियां एवं कर्म का जो फल प्राप्त होता है, उसे भोगनेवाले भोक्ता भी हम ही है। इस प्रत्यक्ष अनुभूति को हम कैसे नकार सकते है?

अतः हमें यह विवेकपूर्वक सोचने की आवश्यकता है कि क्या हमें जो भी अनुभव होता है, वही सत्य होता है? हमने एक कागज पर अनेकों लोहे के कण रखे हुए है। इस लोहकण के मध्य में एक चुम्बक का टूकड़ा रख देने पर अस्त-व्यस्त रखी हुई लोहकण गति करती हुई बहुत सुन्दर रूपरेखा

को धारण कर लेती है। इस चुम्बक को हम जैसे घुमाएंगे, उसके अनुरूप वह नृत्य करती हुई दिखाई देती है। इससे चुम्बक में किसी प्रकार का परिवर्तन वा विकार नहीं होता है, किन्तु उसकी सन्निधिमात्र से ही लोहकण में गति दिखाई देती है। यदि देखें कि क्या लोहकण में स्वतः गति होती है? तो यह सत्य नहीं है। क्योंकि चुम्बक को हटा लेने से लोहकण में कोई संवादिता या रूपरेखा नजर नहीं आती है, न ही उसमें किसी प्रकार का चलन होता है। अर्थात् लोहकण स्वतः गति नहीं होती है और चुम्बक भी उसे घुमाने का कार्य नही करता है। यदि ऐसा होता तो लोहकण के स्थान पर रजकण अर्थात् रेती के कण अथवा कुछ अन्य भी बिखेर दें तो उसमें भी उसी प्रकार की गति दीखाई देनी चाहिए। किन्तु ऐसा नहीं होता है। यह दिखाता है कि न लोहकण में स्वतः गति है और नहीं चुम्बक उसे घुमाता है। किन्तु चुम्बक की सन्निधि में एक चुम्बकीय क्षेत्र निर्मित होता है, जिसकी वजह से उसमें गति प्रतीत होती है।

वैसे ही हमें यह लगता है कि हम ही विविध कार्य करते है, सोचते है, संकल्पादि करते है, उसका क्रियान्वयन करते है और विविध परिस्थिति का भोग करते है। किन्तु यह भी जानते है कि सुषुप्ति अवस्था में जहां बुद्धि आदि का अभाव है, किन्तु हम तो है, तब भी ऐसी कोई चेष्टा नहीं

होती है। दूसरी ओर बुद्धि आदि पंचमहाभूत के बने हुए होने से स्वतः जड़ है। जड़ वस्तु में अपने आप कोई गति व कार्य नहीं हो सकते है। इसका अर्थ यह हुआ कि बुद्धि में जो भी कर्तृत्व आदि का भान हो रहा है वह हम जो चेतन सत्तारूप है, उसकी सन्निधिमात्र से आता है। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि विविध क्रियाएं हम ही कर रहे हैं। वस्तुतः इन समस्त विकारों के मध्य में हम चुम्बक की तरह अविकारी रहते है, अतः एक समय हम कर्ता होते है, तो अन्य समय नहीं भी होते है। हम कभी कर्ता, कभी भोक्ता, कभी श्रोता-मन्ता आदि को धारण करते हुए प्रतीत होते है। हम अविकारी होने से इन सबसे रहित भी होते है। यही हमारा अविकारी स्वरूप है। जो ऐसे हम है कि जिसकी सन्निधिमात्र से विविध क्रियाएं सम्पन्न होती है, किन्तु स्वतः चुम्बकवत् अविकारी बना रहता है - वह हम है, इस प्रकार का निश्चय करें।

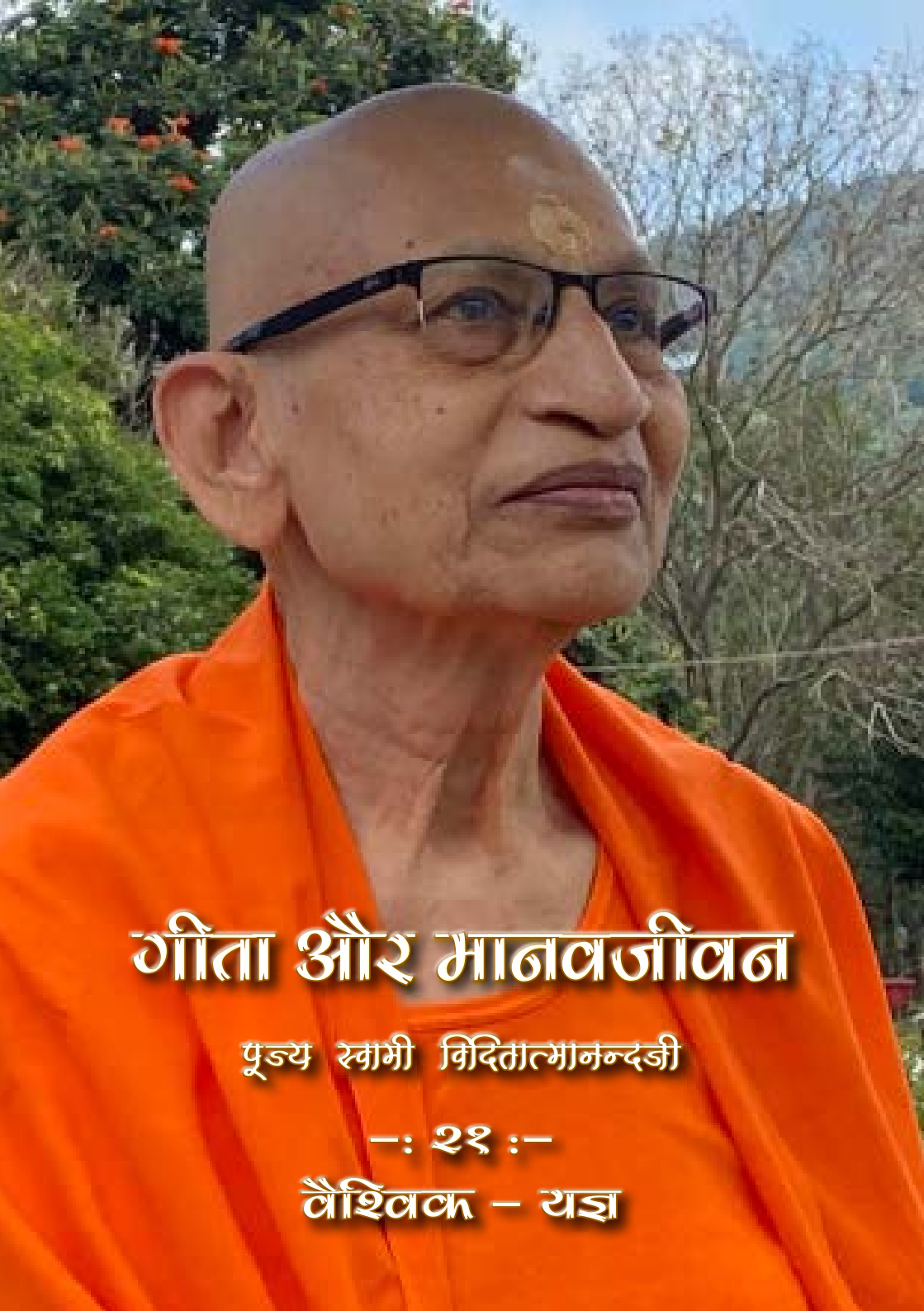

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

–: २१ :–

वैश्विक – यज्ञ

गीता और मानवजीवन

उपनिषद् वैश्विक यज्ञ बहुत सुन्दर वर्णन करते है;

तस्मादपि समिधो यस्य सूर्यः।

यह जो वैश्विक यज्ञ चल रहा है, उसमें सर्व प्रथम अग्नि की अर्थात् स्वर्ग की उत्पत्ति हुई। स्वर्ग में भी यज्ञ चल रहा है। सूर्य समिध अर्थात् इन्धन है। वह सतत होम हो रहा है, सब को शक्ति प्रदान कर रहा है। उससे ही चन्द्र को शक्ति प्राप्त होती है। सूर्य और चन्द्र की प्रतिक्रियाओं के कारण बादल की उत्पत्ति होती है। बादल का जब होम होता है, तब इस पृथ्वी पर औषधि अर्थात् वनस्पति उत्पन्न होती है। जब इस वनस्पति की मनुष्य के शरीर में आहार की तरह आहुति होती है, तब वह शक्ति या वीर्य के रूप में परिवर्तित होती है। वह जब स्त्री में होम होती है, तब प्रजा की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार वैश्विक यज्ञ चलता है। जिसमें सब तत्त्व जब अपना समर्पण करते है और इसलिए इस जगत का चक्र गतिमान रहता है। भगवान भी बताते हैं कि,

'अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।

यज्ञाद्भवति पर्जन्यः यज्ञ कर्मसमुद्रभवः।।

गीता और मानवजीवन

इस समग्र वैश्विक यज्ञ में जगत के सब तत्त्व हिस्सा ले रहे हैं। जगत में कुछ भी निष्क्रिय नहीं है या कुछ भी अनुपयोगी नहीं है। सभी वस्तु का उपयोग है। प्रत्येक तत्त्व अन्य के लिए सहायक, उपयोगी या प्रयत्नशील है। सूर्य, चन्द्र, तारें सतत भ्रमण करते होने पर भी अन्योन्य कभी नहीं टकराते या न कभी लड़ाई करते हैं। कोई किसी के लिए व्यवधान नहीं बनता है। सब एक-दूसरे के साथ संवादिता में है।

अपने देह में भी हाथ, पैर, आंख नाक, कान-यह समस्त कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय अन्योन्य सहकार से संवादिता में चल रही हैं। पैर में कभी ठोकर लगे तो तुरन्त ही हाथ वहां पहुंच कर सोहराने लगता है, किन्तु कभी यह नहीं कहता कि पैर को चोट़ लगी है, उसमें हमें क्या? आंख में साधारण कोई समस्या हो या धूल का कण आंख में उडने पर हाथ तुरन्त ही वहां जाकर सहाय करता है, किन्तु कभी भी यह नहीं कहता कि, 'आंख में हुआ है, उसमें हमें क्या?' इस देह में कभी कुछ होता है तो पूरा देह विविध अंगों की प्रतिक्रिया से उस अंग पर आई हुई मुसीबत को दूर करने के लिए एक साथ समग्रता से प्रयास करते हैं।

गीता और मानवजीवन

इस देह में क्यों संवादिता है? क्योंकि देह के अंगों में अनेकता और विविधता होने पर भी एक ही तत्त्व इस समग्र देह को जोड़े हुए है। इन सब अंगों में आत्मा तो एक ही है। इसलिए अनेकता और विविधता होने पर भी एकता है।

जैसे इस देह में है, वैसा ही समग्र विश्व में है। विश्व को विविध तत्त्वों से जोड़नेवाला कोई एक नियम है, कोई एक धर्म है। जिस हम ईश्वर भी कहते हैं। एक ईश्वर ही इन सब को जोड़नेवाला सूत्र है। ईश्वर कहे या उसे धर्म कहे या उसे संवादिता अथवा एक मूलभूत नियम कहे; किन्तु अनेक को जोड़नेवाला एक तत्त्व ही है। हम भी इस संवादिता में सूर मिलाएं तो अपना जीवन भी संवादित बनता है। जीवन को कैसे संवादित बनाना, सुखी बनाना, उसका उपदेश भगवान गीता में देते हैं। यह जो महान वैश्विक यज्ञ चल रहा है, उसमें अपने कर्म द्वारा हम भी योगदान प्रदान करें। इसलिए भगवान कहते हैं कि

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसंगः समाचर।।

यज्ञ की भावना से किया कर्म मनुष्य को कर्मबन्धन से मुक्त करनेवाला होता है। यज्ञ की भावना से अन्यत् अर्थात् स्वार्थ की भावना से किया गया कर्म बन्धनकर्ता सिद्ध होता है। अतः कौन्तेय! तुम यज्ञभाव से युक्त होकर कर्म करो।

जीवनमुक्त

— ५६ —

बदरीनाथ

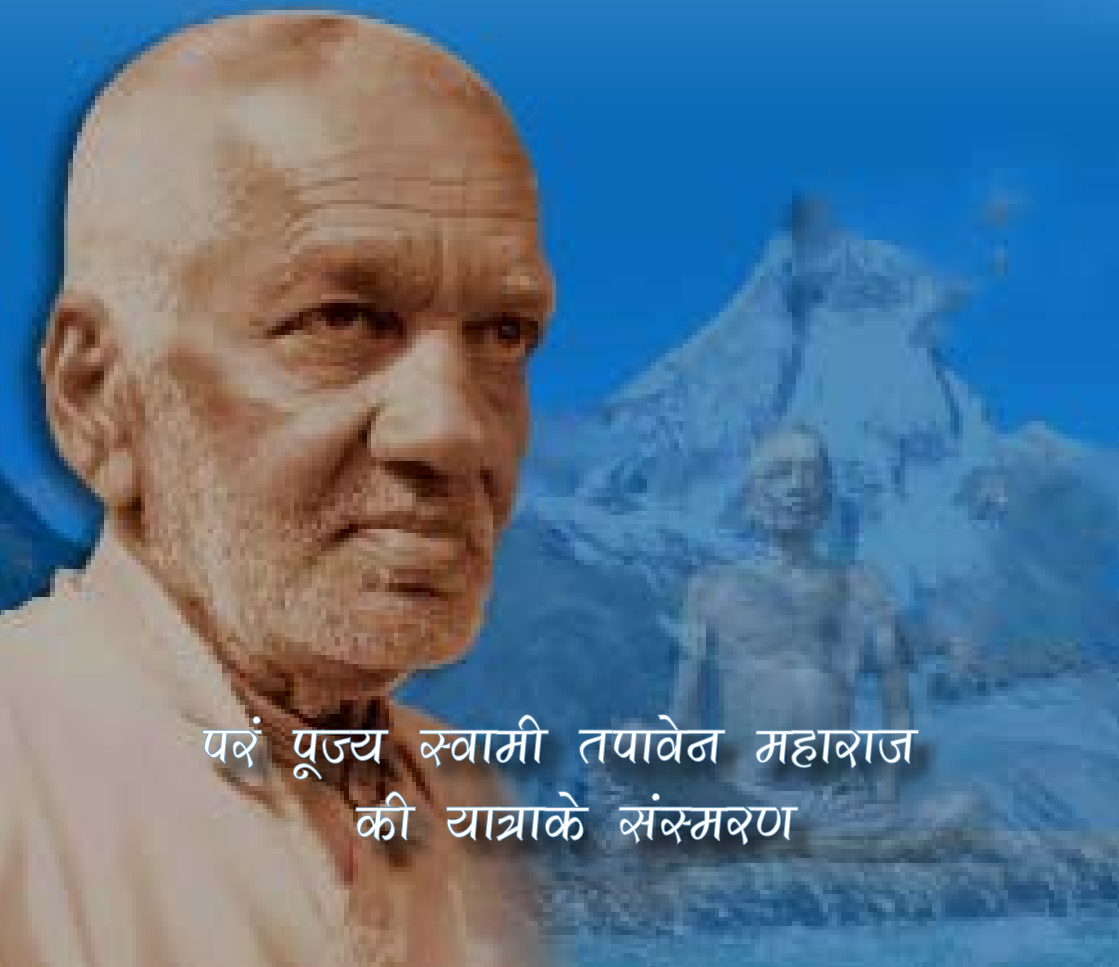

परं पूज्य स्वामी तपावेन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

सन् १९२४ में मैंने पहले पहल केदारनाथ से बदरीनाथ की यात्रा की थी। उस यात्रा में मैं बहुत दिनों तक वहां नहीं रह सका था। परन्तु सन् १९३० में दूसरी बार तथा सन् १९३१ में तीसरी बार हृषीकेश से सीधे बदरीपुरी जाने और उन अवसरों पर वहां कुछ महीनों तक तपोवृत्ति में निवास करने का मुझे सौभाग्य मिला।

बदरीकाश्रम आदि हिमाद्रि शिखरों में विराजित एक पुण्यधाम में रहते हुए मुझे सदा यही प्रतीत होता था कि माया की क्रियाशक्ति सर्वत्र समान रूप से कार्य कर रही है। प्रशांत, एकांत और निगूढ स्थानों में भी यह क्रियाशक्ति प्रवीण दिखायी नहीं देती। वृक्ष, तृण, पौधे, और लताएं फल फूल रही है; पर्वतों से जलधाराएं प्रवाहित हो रही है; नदियां बह रही है; वायु चल रहा है; सूर्य प्रकाशित

हो रहा है। जब जडवर्ग यों सर्वदा व्यापारोन्मुख है, तो चेतनवर्ग की बात ही क्या कहनी! पक्षी उड रहे है; चहक रहे हैं; पशु मैदानों में विचर रहे हैं; विहार कर रहे हैं; विश्राम कर रहे है। मनुष्य भी अपने अपने कर्मों मे संलग्न है। सर्वत्र कर्म ही कर्म है। कर्म वस्तुतः संसार का सहज स्वभाव है। क्रियाशक्ति अर्थात् प्राणशक्ति सभी शरीरों को अनवतरत चलाती रहती है अकर्मण्य भाव होता ही नहीं। इच्छाहीन, उपशांत, निर्विकल्प भाव कठिन होता है। कर्म देहेन्द्रिय का व्यापार है। विषयजन्य सुखदुःख का जनक हैं, इस कर्मरूपी धारा का अतिक्रमण किये बिना, निर्विकल्पभाव के बिना स्वरूपसुख भासित नहीं होते। लेकिन कर्मधारा को पार करना माया का अतिक्रमण करना है। किन्तु माया का अतिक्रमण कर सकना कठिन है : ''मम माया दुरत्यया''।

बदरीकाश्रम जैसे पवित्र स्थानों में भी माया का अतिक्रमण करके परम ब्रह्म की प्राप्ति कर सकना कितना ही दुर्लभ और दुष्कर होता है। चाहे कोई महात्मा कितना ही समाधि में लीन हो तो भी इसके मन व इन्द्रियों को

जीवन्मुक्त

प्रचण्ड शक्ति महामाया मन्द लगती है। एकनिष्ठ ज्ञानी विरागी और महाभाग्यवान् व्यक्ति को छोड़कर और कोई व्यक्ति चाहे कहीं भी चला जाए, कितने ही उंचे हिमश्रृंग पर पहुंच जाए तो भी विश्वमोहिनी मायाशक्ति का वह अतिक्रमण कर नाम रूप क्रिया शून्य समाधि में संलग्न नहीं हो सकता।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री कौशल्या चरित्र

– ०५ –

प्रनवउं परिजन सहित विदेहू।
जाहि राम पद गूढ सनेहू।।

श्री कौशल्या चरित्र

श्रीरामभद्र के वनगमन के लिए रचे गए सारे षड्यन्त्र से अनभिज्ञ कौशल्यामाता को रामभद्र के द्वारा उनके वात्सल्य के उत्तर में जो समाचार प्राप्त होता है, उससे उनके हृदय पर कितना आघात लगा होगा इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। गोस्वामीजी अनेकों उपमाओं के माध्यम से उस दुःख की कल्पना को साकार करने का प्रयास करते हैं। 'उनको वैसी ही अनुभूति हुई जैसे आनन्द और उल्लास से भरे हुए किसी व्यक्ति के सुकुमार हृदय में कहीं से आकर एक विषैला बाण प्रविष्ट हो जाय और असह्य कसक की सृष्टि कर रहा हो अथवा उत्साह से कुलांचे भरती हुई मृगी को अचानक सिंह का भीषण नाद सुनाई पड़ जाय। किंवा, जलाश्रिता मछली को वर्षा के जल से ही उत्पन्न होनेवाले विषैले माजा का प्रभाव मृत्यु की दिशा में धकेल रहा हो। वर्षा के पहले जवास जैसी हरियाली ही उनके अंग-अंग से छलक रही थी। किन्तु इन क्षणों में उनकी वही दशा थी जो वर्षा का जल पड़ते ही झुलस कर जवास की हो जाती है। परन्तु इस असह्य पीड़ा के क्षणों में भी उनका चिरसंगी धैर्य उनका साथ नहीं छोड़ता है।

रामभद्र के साथ आए हुए मंत्रीपुत्र से उन्हें सारा समाचार ज्ञात हो जाता है। वह मां के लिए कठिन परीक्षा का क्षण था। राम जैसे

पुत्र को, जो शत्रुओं का भी स्नेह जीतने में समर्थ रहा हो, उनको वन भेजने की कल्पना भी असह्य थी और वह वनगमन सर्वथा औचित्यशून्य भी था। राज्याभिषेककी सार्वजनिक घोषणा के पश्चात् महाराज श्री सत्य के बन्धन में पूरी तरह बन्धे हुए थे। उन्हें कोई अधिकार नहीं था कि वे अपने व्यक्तिगत वचनों की पूर्ति के लिए सार्वजनिक रूप से स्वीकृत इस सत्य को नकार देते। न केवल स्नेह की दृष्टि से अपितु न्याय का बल भी उन्हें प्राप्त था। यदि वे ऐसे अवसर पर राघवेन्द्र को पिता के आदेश के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा प्रदान करती तो मानवीय दृष्टि से इसमें कोई अनौचित्य न होता। किन्तु तब वे माँ कौशल्या न होकर महारानी कौशल्या ही होती। समर्पिता मां ने अपने अन्तर्द्वन्द्व पर विजय प्राप्त कर ली और तब उनके मुख से जो वचन निकले वह उन्हीं के द्वारा सम्भव थे। वे राम के अधिकार त्याग की भावना को अपना समर्थन प्रदान करती हैं। 'जो केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता।। जौं पितु मातु कहेउ वन जाना। तौं कानन सत अवध समाना।।' यदि माता-पिता दोनों की आज्ञा है तो हे तात! वन को भी अवध के समान जानते हुए आज्ञापालन करो।'

धैर्य का यह स्वर 'राम मातु' के लिए ही सम्भव था। इसके पश्चात् धैर्य ही उनका

महामन्त्र बन गया। धैर्यमयी कौशल्या अम्बा दूसरों को भी इसी मन्त्र का उपदेश देती हैं। उन्होंने अपनी आंखों के समक्ष लाड़ले पुत्र का वेष-परिवर्तन देखा। यह क्षण क्या वे कभी भुला सकती थीं जब रामभद्र ने राजसी वस्त्राभूषण उतारकर वल्कल वस्त्र से स्वयं को आवेष्टित कर लिया। मुकुट का स्थान जटा-जूट ने ले लिया। पर उनकी दृष्टि तो राघव के मुख की और लगी हुई थी जिस पर हर्ष विषाद की कोई छाया तक न थी।

'पितु आयसु भूषन बसन तात तजे रघुवीर।'

कह सकते हैं विषाद का भाव न था यह तो महानता की बात है पर हर्ष का अभाव क्यों? वस्तुतः यह भी रामभद्र के कोमल हृदय का परिचायक था। उन्हें राज्यपद की मुक्ति में अपार सुख का अनुभव हुआ था। कैकेयी अम्बा द्वारा मांगे गए वरदान की बात सुनते ही वे आनन्द में भर उठे थे।

कथा / प्रसंग

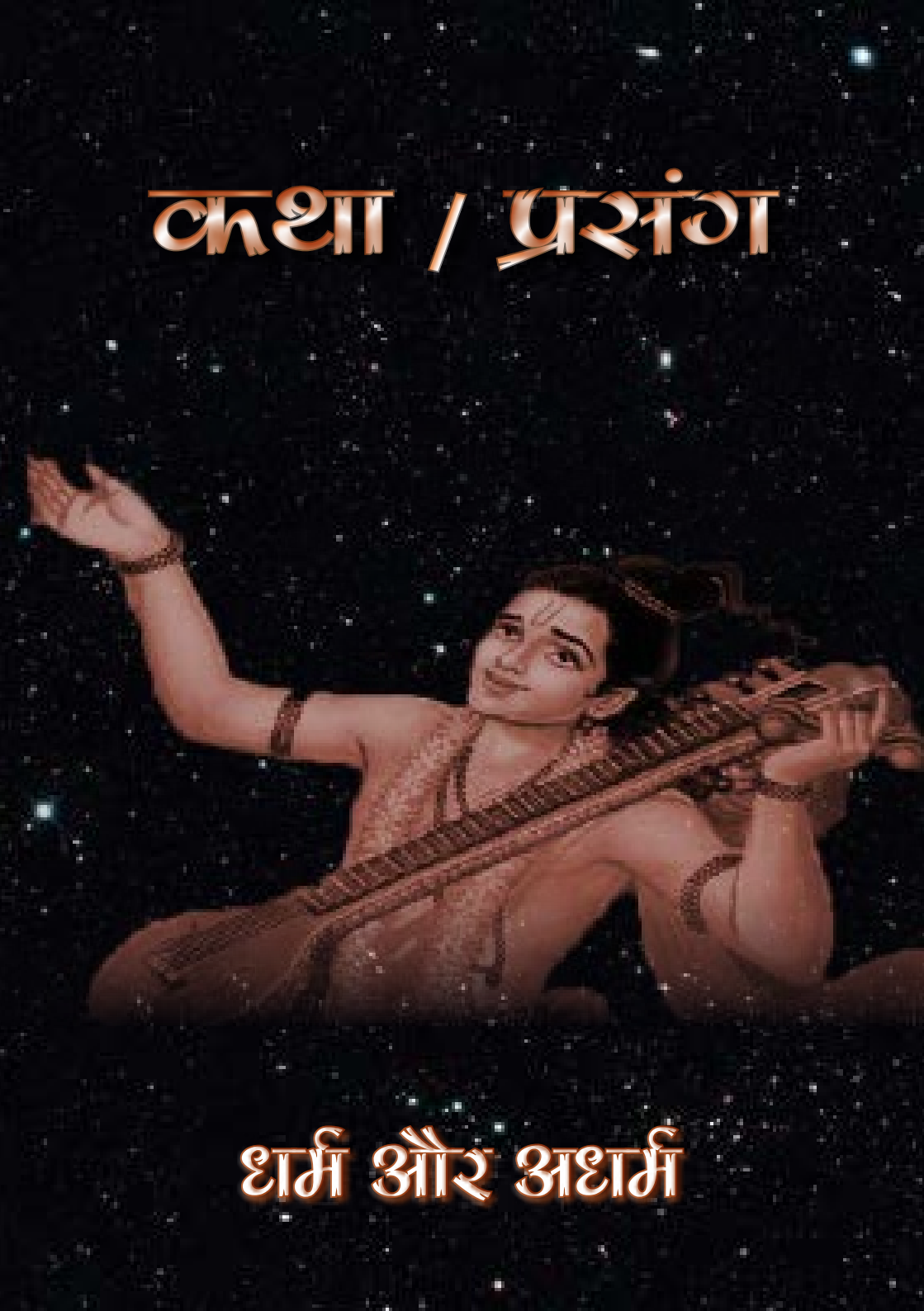

धर्म और अधर्म

धर्म और अधर्म

एक समय की बात है कि देवताओं के सतत उत्कर्ष को देखकर असुर लोग अत्यंत ईर्ष्या से युक्त हो रहे थे। यह देख कर ब्रह्माजी ने असुरों को देवताओं के गुणों से अवगत कराने के लिए एक विलक्षण भोजन समारोह का आयोजन किया। जिसमें दिव्य व्यंजनों परोंसे गए। असुरों ने कहा कि, 'हम ही पहले भोजन करने बैठेगें।'

ब्रह्माजी ने उनकी बात को सहर्ष स्वीकार कर लिया, पर ब्रह्माजी ने एक शर्त रखी कि भोजन के समय आप सब के दोनों हाथों में तीन तीन फिट़ की लकड़ियाँ बाँध दी जायेगी। इस प्रकार आप को भोजन करना पड़ेगा। असुरों ने कहा कि हमें मंजूर है। असुरों के हाथ में लकड़ियाँ बाँध दी गई तथा सामने दिव्य भोजन परोसा गया। असुरों ने खाने के लिए हाथ बढ़ाया किन्तु हाथ को मुँह तक नहीं ले जा पाये। अनेक प्रयत्न करने के उपरान्त भी वे लोग एक ग्रास तक नहीं खा पाये। वे बिना खाये ही निराश हो कर उठ़ गए।

धर्म और अधर्म

अब देवताओं की बारी आई। देवताओं के हाथ बाँध देने पर वे एक दूसरें के सामने बैठ़ गये। एक देवता ने अपने हाथों के सामने बैठे देवता की ओर अपना हाथ बढ़ाया और उसके मुँह में खिलाया उसी प्रकार सब आमने सामने बैठ कर एक दूसरे के मूँह में खिलाने लगे। सब देवता लोग दिव्य भोजन का आस्वादन करते हुए तृप्त हो गए। अपने स्वार्थ की चिन्ता से मुक्त होकर दूसरों के प्रति संवेदनशीलता एवं सेवा की तत्परता से ही देवता लोग उत्कर्ष को प्राप्त हुए हैं, यह बात ब्रह्माजी ने असुरों को समझाई।

प्रत्येक मनुष्य को जीवन में धर्मपालन अवश्य करना चाहिए। धर्म वह जीवन जीने की कला है जिसमें अन्य के प्रति संवेदनशीलता और सेवा की प्रधानता होती है। इसी धर्ममार्ग का अनुगमन करने के कारण देवताओं का देवत्व होता है। यदि मनुष्य में धार्मिक मूल्यों का समावेश होता है, तो वह भी देवतुल्य हो जाता है। ऐसा मनुष्य ही जीवन में कलहों से मुक्त रहते हुए शान्ति एवं प्रबुद्धता-पूर्ण जीवन जीने में समर्थ होता है।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

Gita Gyana Yagna, Ahmedabad

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Birthday Blessings - Rahul Shukla

आश्रम / मिशन समाचार

Rudrabhishek by entire Family

आश्रम / मिशन समाचार

Shiv-Puja

Tanmay Patel, Australia

HBD Shrey

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Devotees from UK

Om Namah Shivaya

Kirtiben & Jayaben

आश्रम / मिशन समाचार

Sarve Bhavantu Sukhinah

आश्रम / मिशन समाचार

Teerth Yatra to Kashi

आश्रम / मिशन समाचार

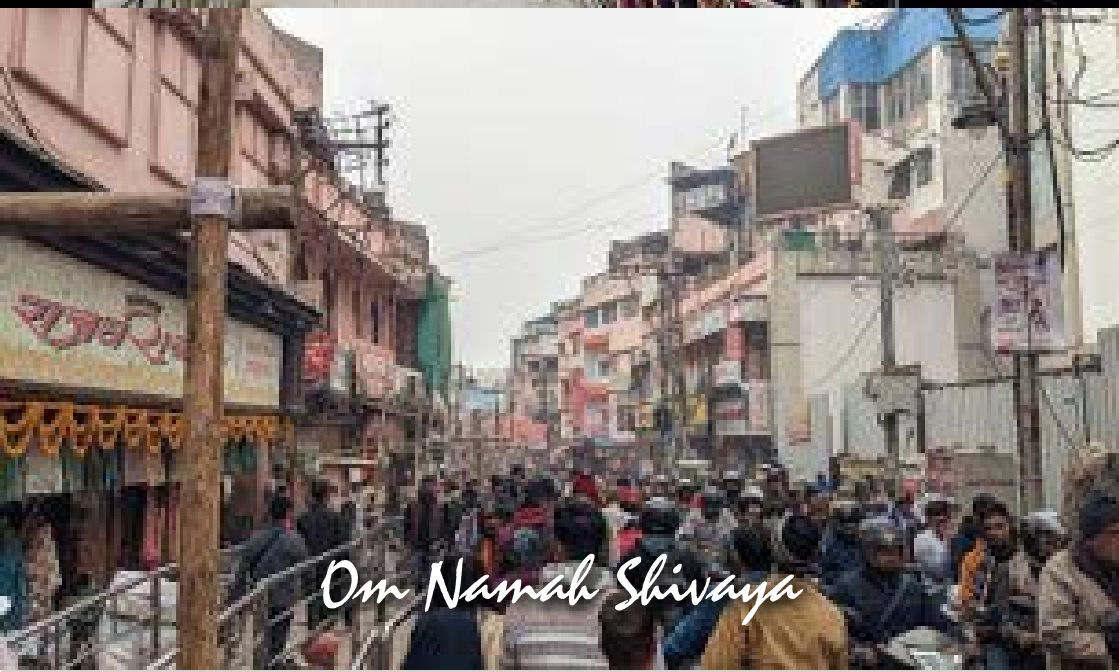

आश्रम / मिशन समाचार

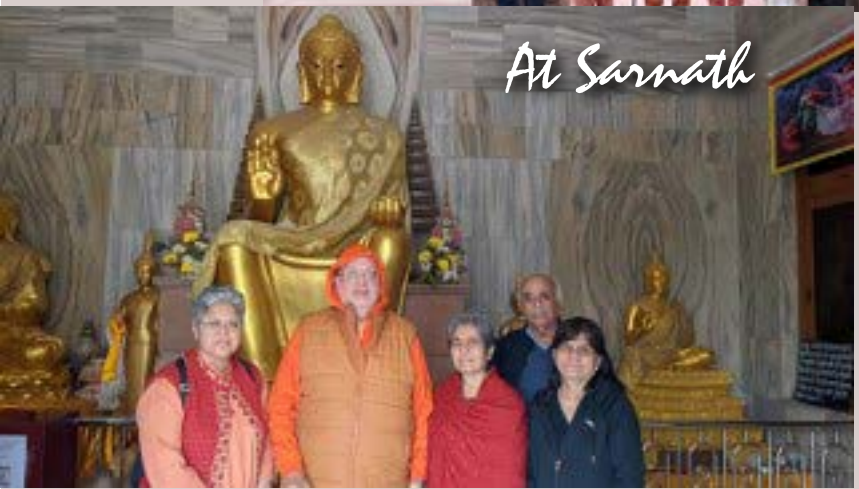

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Awesome darshan of all Ganga Ghats

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

At Ram Mandir, Ayodhya

आश्रम / मिशन समाचार

Lucknow to Ayodhya

आश्रम / मिशन समाचार

Vishnu Sahasrnama Archana @ Lucknow

आश्रम / मिशन समाचार

Vishnu Sahasrnama Archana @ Lucknow

आश्रम / मिशन समाचार

Republic Day Celebrations @ Ashram

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता

(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

गीता श्लोकपाठ

प्रति रविचार, सायं 4 बजे से

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

अध्याय - 12 (भक्ति योग)

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

आश्रम / मिशन समाचार

गीता ज्ञान शिविर

आवासीय शिविर

दि. 21 से 26 फरवरी 2025

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

अध्याय - 5 (ज्ञान कर्म संन्यास योग)

एवं ध्यान, श्लोकपाठ, प्रश्नोत्तर, भजन

एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

एवं अन्य आश्रम महात्मागण

महाशिवरात्री उत्सव

एवं शिविर समापन

26 फरवरी 2025

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी एवं आश्रम महात्मागण

आश्रम / मिशन समाचार

गीता श्लोकपाठ

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

अध्याय - 12 (भक्ति योग)

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

ओनलाईन सत्संग

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

श्लोकपाठ / ध्यान / सत्संग

पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी

INTERNET NEWS

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

(☝ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (☛ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh - Feb '25

Vedanta Piyush - Jan '25

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel
Vedanta Ashram Channel

Published by:
Vedanta Ashram, Indore